

ब्राज़ील

वह दंपती जिसने बीस लाख पेड़ लगाए

युद्ध देखकर लौटे एक उदास फ़ोटोग्राफ़र को अपना पुश्तैनी खेत बंजर मिला। फिर उन्होंने और उनकी पत्नी ने मिलकर पूरा जंगल नए सिरे से उगा दिया।

कहाँ एमोरेस

कौन सेबास्टियाओ और लेलिया सालगाडो, जिन्होंने एक बंजर घाटी में नया जंगल उगा दिया

कब 1998 से आज तक

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

1990 के दशक की शुरुआत में सेबास्टियाओ सालगाडो दुनिया के सबसे मशहूर फ़ोटोग्राफ़रों में से एक थे। वे अपना कैमरा लेकर पूरी दुनिया में घूमे। उन्होंने गहरे कीचड़ में काम करते खनिकों और सूखे रेगिस्तानों से गुज़रते परिवारों की तस्वीरें खींचीं।

1994 में वे नरसंहार की तस्वीरें खींचने रवांडा गए। वहाँ उन्होंने जो देखा, उसने उनका दिल तोड़ दिया। वे हर दिन लाशें देखते थे। इंसानी क्रूरता के उस भयानक मंज़र ने उनकी आत्मा को झकझोर कर रख दिया।

जब वे पेरिस लौटे, तो बहुत बीमार थे। उनके शरीर में अजीब संक्रमण होने लगे थे। डॉक्टर ने बताया कि उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता खत्म हो रही है। डॉक्टर ने कहा कि वे किसी बीमारी से नहीं, बल्कि गहरे सदमे और दुख से मर रहे हैं।

सालगाडो ने अपना कैमरा रख दिया। उन्होंने यूरोप छोड़ने और उस ज़मीन पर लौटने का फैसला किया जहाँ वे पले-बढ़े थे।

मरती हुई घाटी

1998 में सालगाडो और उनकी पत्नी लेलिया अपने पुश्तैनी खेत पर पहुँचे। उस ज़मीन का नाम फ़ज़ेंडा बुलकाओ था। यह ब्राज़ील के मिनास गेराइस में रियो डोसे घाटी में थी।

बचपन में सालगाडो जिस जगह बड़े हुए थे, वह किसी जन्नत जैसी थी। यह घाटी कभी घने अटलांटिक जंगल से ढकी रहती थी। नीले आसमान में विशाल पेड़ लहराते थे। ज़मीन से मीठे पानी के सोते फूटते थे। पेड़ों पर बंदर और रंग-बिरंगे पक्षी चहकते थे।

लेकिन अब वह ज़मीन बेजान हो चुकी थी।

पचास सालों में लकड़ी के लिए पुराने पेड़ों को काट दिया गया था। मवेशियों ने घास को जड़ों तक चर लिया था। तेज़ धूप ने मिट्टी को सुखाकर सख्त ईंट जैसा बना दिया था। भारी बारिश ने उपजाऊ मिट्टी को बहाकर नदी में डाल दिया था।

वहाँ आधे प्रतिशत से भी कम पेड़ बचे थे। घाटी में सन्नाटा पसरा था। सारे परिंदे गायब हो चुके थे। पानी के सोते सूख चुके थे। नंगी पीली पहाड़ियों पर धूल उड़ रही थी।

सालगाडो ने उस उजड़ी हुई ज़मीन को बहुत मायूसी से देखा। लेकिन उनकी पत्नी लेलिया के मन में एक साहसी विचार आया।

उन्होंने कहा, “चलो इस जंगल को दोबारा लगाते हैं।”

सालगाडो हैरान होकर उन्हें देखते रह गए। सैकड़ों हेक्टेयर में फैले उष्णकटिबंधीय जंगल को फिर से उगाना नामुमकिन लग रहा था। इलाके के लोग उन्हें पागल कहने लगे। लेकिन लेलिया पीछे नहीं हटीं।

पहला बीज बोना

अप्रैल 1998 में दोनों ने मिलकर इंसतितूतो तेर्रा नाम का एक समूह बनाया।

वे जानते थे कि वे बाज़ार से कोई भी पेड़ खरीदकर नहीं लगा सकते। अटलांटिक जंगल को सैकड़ों स्थानीय प्रजातियों की ज़रूरत होती है। इन पौधों को एक खास क्रम में मिलकर बढ़ना होता है।

उन्होंने स्थानीय मज़दूरों और एक वनस्पति विशेषज्ञ की टीम बनाई। वे सब इलाके में बचे हुए छोटे-छोटे जंगलों में पैदल गए। वहाँ उन्होंने जंगली पेड़ों से स्थानीय बीज इकट्ठे किए।

उन्होंने खेत पर एक बड़ी नर्सरी बनाई। उन्होंने सीखा कि छोटे बीजों की देखभाल करके उन्हें स्वस्थ हरे पौधों में कैसे बदला जाता है।

1999 में उन्होंने सख्त और सूखी ज़मीन में पहले पौधे रोपे।

पहला साल बेहद मुश्किल था। हर पाँच में से लगभग तीन पौधे सूखकर मर गए। धूप बहुत तेज़ थी और मिट्टी बहुत कमज़ोर थी। पत्तियाँ काटने वाली चींटियों ने नए पौधों की सारी पत्तियाँ चट कर दीं।

कोई और होता तो हार मान लेता। लेकिन सालगाडो और लेलिया ने हिम्मत नहीं हारी।

उन्होंने अपना तरीका बदला। उन्होंने मिट्टी को पोषण देने के लिए जैविक खाद मिलाई। धूप से बचाने के लिए पहले मज़बूत छायादार पेड़ लगाए। फिर उस ठंडी छाँव के नीचे उन्होंने धीरे-धीरे बढ़ने वाले बड़े पेड़ रोपे।

पेड़ जीवित रहने लगे।

> “वह ज़मीन उतनी ही बीमार थी जितना मैं था। लेकिन जब पेड़ों ने बढ़ना शुरू किया, तो मुझे भी नया जीवन मिल गया।”
>
> **सेबास्टियाओ सालगाडो, पत्रकारों से बातचीत में**

साल दर साल पेड़ लगाने का सिलसिला चलता रहा।

स्थानीय स्कूली बच्चे मिट्टी में पौधे लगाने आने लगे। आस-पास के पड़ोसी भी साथ आ गए। नर्सरी इतनी बड़ी हो गई कि हर साल लाखों पौधे तैयार होने लगे।

धीरे-धीरे घाटी में एक चमत्कार होने लगा।

बढ़ती हुई जड़ों ने सख्त मिट्टी को तोड़ दिया। जब बारिश हुई, तो पानी मिट्टी को बहाकर नहीं ले गया। जंगल की ज़मीन एक बड़े स्पंज की तरह काम करने लगी। मिट्टी ने बारिश का पानी सोख लिया और उसे ज़मीन के भीतर पहुँचा दिया।

दशकों से सूखे पड़े पानी के स्रोतों से फिर से साफ़ पानी फूटने लगा। घाटी में छोटी-छोटी नदियाँ फिर से बहने लगीं।

फिर जानवर भी लौट आए।

सबसे पहले कीड़े और तितलियाँ आए। फिर छोटी छिपकलियाँ और मेंढक दिखे। जो पक्षी कई पीढ़ियों से इस इलाके में नहीं दिखे थे, वे फिर से हरी डालियों पर चहकने लगे।

पक्षियों की एक सौ सत्तर से ज़्यादा प्रजातियों ने इस नए जंगल में अपना घोंसला बनाया। प्यूमा, ओस्लॉट और दुर्लभ बंदरों समेत तैंतीस प्रकार के स्तनधारी जीव यहाँ लौट आए।

1998	2M+	300
जिस साल शुरुआत हुई	लगाए गए स्थानीय पेड़	पुनर्जीवित स्थानीय पेड़ों की किस्में

भविष्य के लिए एक जंगल

आज फ़ज़ेंडा बुलकाओ की तस्वीर पूरी तरह बदल चुकी है।

घास और मवेशियों का वह बंजर खेत अब एक स्थायी प्रकृति अभयारण्य बन चुका है। इसे दुनिया भर में अटलांटिक फ़ॉरेस्ट बायोस्फीयर रिज़र्व के आधिकारिक हिस्से के रूप में मान्यता मिली है।

इस अभयारण्य में बीस लाख से ज़्यादा स्थानीय पेड़ खड़े हैं। पूरी नदी घाटी में इंसतितूतो तेर्रा ने पड़ोसी खेतों में भी हज़ारों जल स्रोतों को पुनर्जीवित करने में मदद की है।

इस जंगल ने सेबास्टियाओ सालगाडो को भी नया जीवन दिया। मिट्टी में काम करने से उन्हें अपनी ताकत वापस मिली। उन्होंने फिर से अपना कैमरा उठाया। इसके बाद उन्होंने धरती की सबसे अछूती जगहों की तस्वीरें खींचने में आठ साल बिताए, जो उनकी मशहूर किताब *Genesis* बनी।

मई 2025 में 81 वर्ष की उम्र में सालगाडो का निधन हो गया। उनके और लेलिया के लगाए पौधे आज भी ब्राज़ील की धूप में बढ़ रहे हैं।

उनके काम ने साबित कर दिया कि इंसान के हाथ सिर्फ प्रकृति को नष्ट ही नहीं करते। धैर्य और प्यार से वे पूरी दुनिया को फिर से ज़िंदा कर सकते हैं।

कब क्या हुआ

- **1994** युद्ध के दुख से टूटकर सालगाडो ने रवांडा छोड़ा।
- **1998** उन्होंने और लेलिया ने पारिवारिक खेत को संवारने के लिए इंसतितूतो तेर्रा बनाया।
- **1999** टीम ने सूखी ज़मीन में पहले पौधे लगाए।
- **2009** इस रिज़र्व को यूनेस्को के अटलांटिक फ़ॉरेस्ट बायोस्फीयर रिज़र्व में शामिल किया गया।
- **2025** सालगाडो का 81 वर्ष की उम्र में निधन हुआ, पीछे एक हरा-भरा जंगल छोड़ गए।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

ज़्यादातर लोग सोचते हैं कि नष्ट हो चुका वर्षावन कभी दोबारा नहीं लौट सकता। इस काम ने दिखाया कि अगर इंसान मौका दे, तो प्रकृति खुद को ठीक कर सकती है। इसमें बीस साल से ज़्यादा की कड़ी मेहनत लगी, लेकिन सूखे सोते फिर बहने लगे और दुर्लभ वन्यजीव लौट आए।

हमारी राय

ज़मीन को संवारने से उन लोगों का घाव भी भर गया जिन्होंने वहाँ काम किया। सालगाडो ने युद्ध में इंसानियत पर भरोसा खो दिया था, लेकिन जंगल ने उन्हें वह भरोसा लौटा दिया।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 मिट्टी से शुरुआत करें

उन्होंने सिर्फ पेड़ नहीं लगाए। उन्होंने पहले मिट्टी सुधारी और पानी को बचाया।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते जब कोई बड़ा काम शुरू करें, तो नई चीज़ें जोड़ने से पहले बुनियादी ज़मीन मज़बूत करें।

2 छोटे कदमों की ताकत पर भरोसा रखें

बीस लाख पेड़ों का जंगल एक-एक पौधा रोपकर ही खड़ा हुआ।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते अपनी किसी अच्छी आदत को रोज़ केवल एक छोटा मिनट ज़रूर दें।

3 दुख को काम में बदलें

मायूसी में टूटने के बजाय सालगाडो ने अपनी ऊर्जा जीवन को सींचने में लगा दी।

यह आज़माएँ: जब बुरी ख़बरें मन को भारी करें, तो कोई पौधा लगाएं या किसी साझी जगह की सफ़ाई करें।

4 समुदाय को साथ लेकर चलें

उन्होंने स्थानीय किसानों को सिखाया और हज़ारों पड़ोसियों को बीज बांटे।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते अपने किसी साथी या पड़ोसी के साथ कोई काम का साधन या जानकारी साझा करें।

साथ ले जाने वाली एक बात

जब कोई ज़मीन मर रही हो, तो मातम मत मनाइए। एक पेड़ लगाइए।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

UNESCO
Sebastião Salgado, a photographer who regained his vision through his love of nature

Al Jazeera
A lens on poverty and the environment: Sebastiao Salgado is dead at age 81

Instituto Terra
Official Website of Instituto Terra

तथ्य-जाँच नोट: मूल अभयारण्य पर लगाए गए पेड़ों की संख्या बीस लाख से अधिक मानी जाती है, जबकि पूरी घाटी में लगाए गए कुल पेड़ों की संख्या तीस लाख से अधिक है। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।